



बरली की दुनिया



बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान इन्दौर की मासिक समाचार पत्रिका

“मानव जाति एक पक्षी के समान है, जिसके दो पंख हैं, एक पुरुष दूसरा स्त्री। जब तक दोनों पंख मजबूत न होंगे, एक साँझी शक्ति द्वारा हिलाएँ न जाएंगे, तब तक पक्षी की आकाश में ऊँची उड़ान असम्भव है।”

वर्ष -1

अंक 11

जनवरी 2008

मूल्य: 5 रु.

साधारण बुखार

बुखार आना तो सामान्य बात है लेकिन लंबे समय तक बुखार रहने से कई बड़ी बीमारियाँ हो सकती। आमतौर पर सभी तरह के बुखार को साधारण बुखार समझते हैं और डॉक्टर के पास न जाकर बड़वे के पास झाड़-फूँक करवाने चले जाते हैं या दवाई-गोली खरीदकर खा लेते हैं। ऐसे में ज्यादातर बुखार बिगड़ जाता है और नतीजा यह होता है कि फिर इलाज में समय और पैसा दोनों बर्बाद होते हैं। बुखार अलग-अलग तरह का होता है इसलिए इसके इलाज भी अलग-अलग होते हैं। बुखार का इलाज शुरू करने से पहले, यह जानना जरूरी होता है कि बुखार किस बीमारी के कारण से आ रहा है। मलेरिया, टी.बी. पीलिया व टाइफाइड की



संस्थान में प्रशिक्षणार्थी थर्मामीटर से शरीर का तापमान जाँचना सीखते हुए

जानकारी संस्थान की पत्रिका के पिछले अंकों में पहले दे चुके हैं। 'बरली की दुनिया' के इस अंक में साधारण बुखार की पहचान, कारण, तेज बुखार के खतरे और बचाव के बारे में जानकारी दे रहे हैं ताकि बुखार का समय पर इलाज करवा सकें।

सामान्य बुखार, नब्ज और ब्लड प्रेशर बुखार अपने आप में कोई बीमारी नहीं है। स्वस्थ इंसान के शरीर का तापमान 98.4 डिग्री फ़ैरनहाइट होता है। जैसे ही इस तापमान से इंसान के शरीर का तापमान बढ़ने लगता है तो इसे बुखार आना कहते हैं। बुखार आने से हमें यह पता चलता है कि हमारे शरीर में किसी बीमारी के कीटाणुओं ने

हमला किया है और हमारे शरीर में बीमारियों से लड़ने वाली ताकत उन कीटाणुओं से लड़ रही है, लेकिन तेज बुखार खतरनाक होता है, खासकर बच्चों के लिए। जैसे ही बुखार 100 डिग्री से बढ़ने लगता है तो उसे तेज बुखार कहते हैं। 102 से 104 डिग्री के बीच के

बुखार को बहुत तेज बुखार कहते हैं। 104 डिग्री से ज्यादा बुखार का बढ़ना जीवन के लिए खतरनाक हो सकता है। थर्मामीटर में अगर हमारे शरीर का तापमान 98.4 डिग्री फ़ैरनहाइट से ज्यादा होने लगे तो शरीर में बुखार होता है परंतु इस बात का ध्यान रहे कि शरीर का तापमान 98.4

डिग्री फ़ैरनहाइट से कम रहना या लगातार कम होते जाना भी उतना ही खतरनाक है जितना बुखार तेज होने पर होता है।

इंसान की नब्ज (नाड़ी) सामान्यतः एक मिनट में 60 से 80 बार धड़कती है, इंसान का ब्लड प्रेशर (खून का दौरा) सामान्यतः 120/80 होता है। इंसान की नब्ज की धड़कन या ब्लड प्रेशर ऊपर-नीचे होता है तो इंसान को तुरंत डॉक्टर को दिखाना चाहिए।

बुखार की पहचान

- शरीर का तापमान सामान्य से ज्यादा होना।
- पूरे शरीर में दर्द होना।
- मुँह में कड़वाहट रहना या जीभ का स्वाद फीका हो जाना।
- कुछ खाने का मन नहीं होना।

बुखार होने के कारण

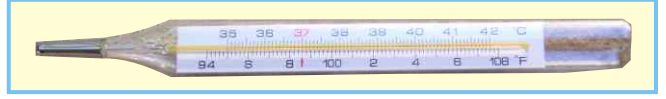
जब शरीर में कीटाणु हमला करते हैं तब इंसान को बुखार आता है। इंसान का शरीर कीटाणुओं से लड़ने के लिए अपना तापमान बनाए रखता है। हमारा शरीर जब इन कीटाणुओं का मुकाबला नहीं कर पाता और ये कीटाणु हमारे शरीर में आ जाते हैं तो हमें बुखार हो जाता है। बुखार आने से हमारे शरीर में बीमारियों से लड़ने की ताकत बहुत कम हो जाती है। ये कीटाणु कई तरह से हमारे शरीर में जा सकते हैं जैसे :-

- ज्यादा देर तक तेज धूप में रहने से।
- मौसम बदलने से।
- सर्दी-खाँसी या गला खराब होने से।
- बहुत ज्यादा काम करने से।
- दूषित खाना खाने व पानी पीने से।
- दूषित हवा में साँस लेने से।
- लू लगने से।
- दस्त होने पर पानी की कमी होने से।
- गंभीर घाव या चोट लगने से।

बुखार को थर्मामीटर से जाँचने का सही तरीका

बुखार आने पर ज्यादातर लोग उसके शरीर को छूकर देखते हैं। शरीर को छूकर हम बुखार का सही अनुमान नहीं लगा सकते क्योंकि इससे शरीर के सही तापमान का पता नहीं चलता है। बुखार को देखने के लिए थर्मामीटर होता है। थर्मामीटर शरीर का सही तापमान बताता है।

थर्मामीटर से शरीर का तापमान देखकर ही हम उस इंसान का सही समय पर इलाज कर सकते हैं। इसलिए हर घर में थर्मामीटर होना चाहिए और थर्मामीटर से तापमान जाँचते आना चाहिए।



थर्मामीटर कई तरह का होता है। हमें इस थर्मामीटर का उपयोग करना चाहिए। थर्मामीटर को दो-तीन तरह से उपयोग किया जा सकता है। मुँह, बगल और गुदा में लगाकर तापमान देख सकते हैं।

थर्मामीटर को ज्यादातर मुँह या बगल में लगाकर तापमान जाँचते हैं। छोटे बच्चे की गुदा याने टट्टी की जगह में लगाकर तापमान जाँच सकते हैं। थर्मामीटर को हाथ में पकड़कर कलाई के झटके से चाँदी सी चमकती रेखा का तापमान 98.4 डिग्री फ़ैरनहाइट से नीचे लाएँ उसके बाद थर्मामीटर से जिस इंसान का तापमान जाँचना है उसके मुँह में जीभ के नीचे या बगल/काँख में या गुदा यानी टट्टी की जगह लगाएँ। थर्मामीटर को 3 मिनट तक लगा रहने दें फिर उसे निकालकर देखें कि तापमान कितना है।

थर्मामीटर को उपयोग करते समय ध्यान रखने वाली बातें

- थर्मामीटर को उपयोग करने की जानकारी होना चाहिए।
- थर्मामीटर को उपयोग करने से पहले साबुन और पानी से धोना चाहिए।
- थर्मामीटर की घुंड़ी को नहीं पकड़ना चाहिए क्योंकि इससे तापमान बढ़ जाता है।
- थर्मामीटर को मुँह से चबाना नहीं चाहिए क्योंकि इसका पारा शरीर में चले जाए तो बहुत खतरनाक होता है।
- थर्मामीटर को मुँह में लगाकर तापमान जाँचते हैं तो 3 मिनट तक लगाकर रखें।
- थर्मामीटर को बगल/काँख में लगाकर तापमान जाँचते हैं तो 5 मिनट तक लगाकर रखें।
- छोटे बच्चे के हाथ में थर्मामीटर नहीं देना चाहिए।

तेज बुखार से होने वाले खतरे

- बुखार में इंसान को खाना अच्छा नहीं लगता है। खाना न खाने के कारण दिन पर दिन कमजोर होता चला जाता है।

- शरीर में बीमारियों से लड़ने की ताकत कम हो जाती है जिससे दूसरी बीमारियाँ होने का खतरा बढ़ जाता है।
- बहुत तेज बुखार का दिमाग पर असर पड़ता है जिससे इंसान की मानसिक हालत बिगड़ सकती है और सोचने व काम करने की ताकत कम हो सकती है।
- तेज बुखार होने पर दौरे पड़ने लगते हैं।
- तेज बुखार होने पर इंसान को लकवा हो सकता है जिससे दिमाग हमेशा के लिए खराब हो सकता है।
- अगर बुखार कम नहीं होता तो इंसान मर भी सकता है।
- अगर गर्भवती महिला को लगातार तेज बुखार आता है तो उसका बच्चा/बच्ची पेट में भी मर सकता है, बच्चा/बच्ची गिर सकता है या कमजोर बच्चा/बच्ची पैदा हो सकता है।

बुखार आने पर ध्यान रखने वाली बातें

कई जगहों पर बुखार आने पर नाव के पत्ते का रस पिलाते हैं। पुवाड़िया का दातून करवाते हैं। पुवाड़िया की पत्तियाँ हाथ पर बांधी जाती हैं, हो सकता है इससे बुखार ठीक होने में मदद मिल सकती है परंतु बुखार का सही इलाज नहीं हो पाता है। बुखार के इलाज के लिए हमें डॉक्टर के पास जाना चाहिए यदि समय पर बुखार का इलाज नहीं होगा तो इंसान को ज्यादा तकलीफ हो सकती है।

पवित्र लेखों में कहा है कि, “बीमार को बीमारी से जल्दी ठीक करने के लिए भौतिक और आध्यात्मिक, दोनों शक्तियों का उपयोग करना चाहिए, कोई भी अधूरा इलाज पर्याप्त नहीं है।”

इसका मतलब है कि बीमार होने पर डॉक्टर की सलाह से दवा खानी चाहिए और अच्छे स्वास्थ्य के लिए ईश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए। दोनों ही बातें हमारे स्वास्थ्य के लिए जरूरी हैं इसमें लापरवाही नहीं होनी चाहिए।

बीमार इंसान डाक्टर से इलाज करवाता है और डाक्टर की सलाह से दवाई खाता है पर इसके साथ ही हमें ईश्वर से आरोग्य के लिए प्रार्थना भी करनी चाहिए। उदाहरण के लिए आरोग्य की एक प्रार्थना यह है:

“तेरा नाम ही मेरा आरोग्य है, हे मेरे ईश्वर! तेरा स्मरण ही मेरी औषधि है। तेरा सामीप्य ही मेरी आशा और तेरा प्रेम ही मेरा सहचर है। मुझ पर तेरी अनुकम्पा ही मेरी निरोगता, इहलोक तथा परलोक दोनों में मेरी आपद् सहायक है।

वस्तुतः तू ही है सर्वप्रदाता, सर्वज्ञ एवं सर्वप्रज्ञ।”

बुखार में यह करना चाहिए

- बहुत तेज बुखार आने पर उसके कपड़े उतार देने चाहिए और उसे कुछ भी नहीं ओढ़ाना चाहिए।
- बुखार 102 से 104 डिग्री के बीच हो तो उस इंसान के हाथ-पैर या सिर पर ठंडे पानी में भिगोकर कपड़े की पट्टियों को बार-बार रखनी चाहिए।
- बुखार वाले इंसान को बार-बार ज्यादा मात्रा में शुद्ध पानी पिलाना चाहिए।
- बुखार से शरीर में बहुत कमजोरी आ गई हो तो ठंडे पानी में नमक, शक्कर या गुड़ मिलाकर पिलाना चाहिए।
- घर के खिड़की, दरवाजे खोलकर रखना चाहिए जिससे इंसान को ताजी हवा मिलती रहे।
- बुखार वाले इंसान को आराम करने देना चाहिए।
- उसके खाने-पीने का ध्यान रखना चाहिए।

बुखार में यह नहीं करना चाहिए।

कई लोग ऐसा मानते हैं कि बुखार आने पर बबूल की छाल उबालकर नहाने, गले में कड़वी तुमड़ी के बीज बांधने, खजूर के पत्ते, अंजन के पत्ते, खड़ी लाल मिर्ची को शरीर से उतारने से बुखार ठीक हो जाता है। ऐसा करने से बुखार ठीक नहीं होता है। बुखार कीटाणुओं से होता है और इन कीटाणुओं को खत्म करने लिए दवाई की जरूरत होती है इसलिए समय पर डाक्टर के पास जाकर सही इलाज करवाना चाहिए। अगर समय पर इलाज नहीं होगा तो इंसान मर भी सकता है। इसलिए हमें इन गलत मान्यताओं में उलझकर अपना समय और जीवन बर्बाद नहीं करना चाहिए।

खान-पान व आराम

बुखार आने पर हमेशा मुँह का स्वाद फीका या कड़वा हो जाता है। इसलिए इंसान को खाना-पीना अच्छा नहीं लगता है। अगर हम खाना नहीं खाएँगे तो हमारा शरीर कमजोर हो जाएगा और बुखार से लड़ नहीं पाएगा। इसलिए हमें समय के अनुसार कुछ न कुछ खाते पीते रहना चाहिए। कभी भी दवा खाली पेट नहीं लेना चाहिए। दवा खाली पेट लेंगे तो चक्कर आते हैं, पसीना छूटता है उल्टी हो सकती है, जी घबराता है, पेट में जलन हो सकती है। इसलिए दवा खाने से पहले पतला दलिया, राबड़ी या खिचड़ी आदि खाना चाहिए। दूध, दही या छाछ पीना

चाहिए। बुखार आने पर इंसान को सामान्य खाना खाते रहना चाहिए। बुखार में इंसान के खान-पान का खास ध्यान रखना चाहिए।

बुखार से बचाव

बुखार से बचने के लिए हमें नीचे लिखी बातों का ध्यान रखना चाहिए।

- ज्यादा देर तक तेज धूप में नहीं रहना चाहिए।
- मौसम बदलने पर हमें अपना ध्यान रखना चाहिए।
- सर्दी-खाँसी या गला खराब होने पर इलाज करवाना चाहिए।
- लगातार लंबे समय तक काम नहीं करना चाहिए। काम के बीच में थोड़ा-थोड़ा आराम करना चाहिए।
- खाना साफ व ताजा खाना चाहिए।
- पानी हमेशा साफ व ढँका हुआ पीना चाहिए।
- साफ व ताजी हवा में रहना चाहिए।
- गर्मी के दिनों में लू से बचना चाहिए।
- दस्त होने पर लगातार जीवन रक्षक घोल पीना चाहिए।
- गंभीर घाव या चोट लगने पर तुरंत डॉक्टर से इलाज करवाना चाहिए।

संस्थान के समाचार

राजस्थान की मुस्लिम महिलाओं के समूहों का प्रशिक्षण

राजस्थान के जिला अजमेर व भीलवाड़ा से गरीब नवाज महिला एवं बाल कल्याण समिति, अजमेर और टोंक जिला से रेहमानिया महिला एवं बाल कल्याण समिति, जोधपुर से



मारवाड़ महिला कल्याण सोसायटी और जयपुर से नेशनल मुस्लिम महिला समिति के 28 मुस्लिम महिला सदस्यों का एक समूह व 5 कार्यकर्ता 3 से 5 जनवरी 2008 तक संस्थान में दिल्ली स्थित आई. एफ. ई. एस. द्वारा

आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया। वे तीन दिनों तक संस्थान में रहे और यहाँ पर चलाए जा रहे सभी कार्यक्रमों को देखा। इस दौरान उन्होंने यहाँ पर काम कर रहे सभी स्टाफ और प्रशिक्षण ले रही प्रशिक्षणार्थियों से काफी करीब से बातचीत की और संस्थान के प्रशिक्षण व पाठ्यक्रमों के बारे में जाना। वे यहाँ के अनुशासन और नियमों को देखकर बहुत प्रभावित हुईं और जाते समय जयपुर की श्रीमती समरीन खान ने अपना यहाँ का अनुभव बताते हुए कहा कि, "बरली संस्थान मुझे सपने की एक दुनिया जैसा लगा और मैं यहाँ पर दुबारा आना चाहूँगी।" जयपुर की ही श्रीमती समीना मिर्जा ने कहा कि उन्हें यहाँ की सेवा भावना से प्रेरणा मिली। भीलवाड़ा की श्रीमती खतीजा बानू ने कहा कि उन्हें बरली संस्थान की गतिविधियाँ बहुत ही अच्छी लगी। श्रीमती शमशाद बेगम ने भविष्य में यहाँ पर आकर सेवा देने की इच्छा जाहिर की। जोधपुर की श्रीमती जिया खान ने कहा कि उन्हें यहाँ का माहौल एक परिवार की तरह लगा। अजमेर की श्रीमती शहजादी खानुम ने कहा कि "बरली संस्थान अपने आप में एक मिसाल है जो किसी की तारीफ की मोहताज नहीं है। यहाँ आकर किसी प्रशिक्षण की जरूरत नहीं क्योंकि यहाँ के कार्य को देखकर ही पूरी ट्रेनिंग मिल जाती है।"

संस्थान में गणतंत्र दिवस मनाया

दिनांक 26 जनवरी 2008 को गणतंत्र दिवस के अवसर पर बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान में ध्वजारोहण का कार्यक्रम हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। ध्वजारोहण का



ध्वजारोहण करते हुए कु. सुमन वास्कले व श्रीमती षीलावंतीबाई

कार्यक्रम संस्थान की निदेशिका डॉ. (श्रीमती) जनक मगिलिगन, प्रबंधक श्री जिम्मी मगिलिगन, कर्नल विनय हाण्डा व संस्थान के निदेशक मंडल की सदस्या डॉ. श्रीमती गीता हाण्डा की उपस्थिति में प्रशिक्षणार्थी जिला बुरहानपुर की सुमन वास्कले और बरली संस्थान से सेवानिवृत्त 78 वर्षीय वरिष्ठ कार्यकर्ता श्रीमती



सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति देती कु. सुमन वास्कले एवं प्रशिक्षणार्थी

शीलावन्तीबाई द्वारा किया गया। इस अवसर पर संस्थान की निदेशिका ने सभी को गणतंत्र दिवस की बधाई दी। उन्होंने बताया कि भारतीय संविधान 1950 को लागू हुआ

इसी उपलक्ष्य में हम ये दिन मनाते हैं। इस संविधान में सभी के लिए मौलिक अधिकार दिए गए हैं। मौलिक अधिकारों में सभी को अपनी बात स्वतंत्रता के साथ कहने का हक है। इसके अलावा देश के प्रति हम सभी का कुछ कर्तव्य भी है



कु. कमला व कु. मीना देश भक्ति गीत गाते हुए

जैसे देश के प्रति वफादार होना, कानून का पालन करना, स्वतंत्रता का दुरुपयोग नहीं करना और अपने तिरंगे का सम्मान करना चाहिए।

संस्थान के निदेशक मंडल की सदस्या डॉ. श्रीमती गीता हाण्डा ने उपस्थित मेहमानों का स्वागत किया और महिला सशक्तिकरण पर जोर डालते हुए कहा कि संविधान में महिला के अधिकारों की रक्षा के लिए भी प्रावधान है। इसलिए सभी महिलाओं को अपने अधिकारों के प्रति सजग होकर अपना सशक्तिकरण करना एवं साथ ही साथ दूसरी महिलाओं को भी सशक्तिकरण के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

ध्वजारोहण के पश्चात कु. रितिका, कु. अमृता, कु. मीना. कु. बाखली, कु. अनिता, कु. कमला एवं कु. ज्योति ने हिन्दी में देशभक्ति तथा खरगोन और झाबुआ की प्रशिक्षणार्थियों ने भिलाली और बारेला बोली में समूह गीत प्रस्तुत किए। कार्यक्रम का संचालन एवं आभार प्रदर्शन संस्थान की कार्यक्रम अधिकारी सुश्री अर्चना मारगोनवार ने किया।

डेनमार्क से संस्थान देखने आई

9 जनवरी 2008 को डेनमार्क से रोटरी इंटरनेशनल की सदस्या श्रीमती लोटे डाह इंदौर के कुछ स्थानीय सदस्यों के साथ संस्थान देखने आईं। उन्होंने सिलाई, कढ़ाई, बाटिक और विभिन्न हस्तकलाओं के काम करते हुए देखा और समझा कि किस प्रकार ये महिलाएं इन कलाओं को सीखकर अपने आपको सशक्त कर रही हैं। संस्थान में चल रहे कार्यों को देखकर वे बहुत प्रभावित हुईं और कहा कि वे यहाँ से एक नया अनुभव लेकर जा रही हैं और उन्हें यहाँ पर बहुत कुछ सीखने को मिला। जाने से पहले यह भी कहा कि भविष्य में वे अपनी बेटी को इस संस्थान में सेवा देने के लिए जरूर भेजेंगी।

नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग की सिलाई एवं कटाई की परीक्षा का परिणाम

नवंबर 2007 में संस्थान में 93वाँ प्रशिक्षण लेने वाली सामुदायिक स्वयंसेविकाओं द्वारा दी गई नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग की कटाई और सिलाई की परीक्षा के परिणाम आ गए हैं। जो प्रशिक्षणार्थी पास हो गईं हैं वे अपनी अंकसूची संस्थान में आकर ले जाएं। परीक्षा में पास हुई प्रशिक्षणार्थियों के नाम नीचे दिए गए हैं।

क्र.	नाम	शिक्षा स्तर	लिखित अंक 30	प्रेक्टिकल 90	हाजिरी 80	कुल अंक कुल 200	परिणाम
1.	मनीषा कनासे	साक्षर	18	72	72	162	पास
2.	परवीन पठान	साक्षर	12	60	70	142	पास
3.	सुबली बड़ौले	साक्षर	12	68	65	145	पास
4.	सोना जमरे	साक्षर	12	54	66	132	पास
5.	रज्जु चौहान	साक्षर	12	68	72	152	पास
6.	रेखा सोलंकी	साक्षर	13	67	72	152	पास
7.	हिरू डुडवे	साक्षर	17	61	70	148	पास
8.	नुरु बर्डे	साक्षर	12	62	64	138	पास
9.	शर्मिला सोलंकी	10वीं	21	71	70	162	पास
10.	सुरमा सोलंकी	साक्षर	12	66	71	149	पास
11.	संगीता चौहान	साक्षर	12	62	71	145	पास
12.	ढोकली तोमर	साक्षर	12	68	71	151	पास
13.	सुनीता सोलंकी	साक्षर	12	58	72	142	पास
14.	नोहजु सोलंकी	साक्षर	13	56	73	142	पास
15.	रेवा सिटोले	साक्षर	12	73	71	156	पास
16.	तारू मोर	साक्षर	12	62	68	142	पास
17.	कजरी यादव	साक्षर	20	68	74	162	पास
18.	माया कोहली	साक्षर	15	68	73	156	पास
19.	किरण मंडलोई	5वीं	20	67	73	160	पास
20.	रेखा चौहान	साक्षर	12	64	70	146	पास
21.	ममता जमरे	साक्षर	12	69	70	151	पास
22.	रेखा मंडलोई	5वीं	13	67	72	152	पास
23.	सुरमी चौहान	5वीं	18	66	72	156	पास
24.	मीरा चौहान	5वीं	12	68	70	150	पास
25.	ललीता चौहान	5वीं	13	68	70	151	पास
26.	सरिता कुमारी	10वीं	17	69	72	158	पास
27.	पामिली कुमारी	10वीं	21	75	74	170	पास
28.	मेनका मोरे	6वीं	12	68	69	149	पास
29.	शारदा दरबार	6वीं	12	64	70	146	पास
30.	सावित्री मंडलोई	साक्षर	17	62	78	157	पास
31.	निर्मला देवी	10वीं	21	68	70	159	पास
32.	टौनडौन देवी	10वीं	23	65	70	158	पास
33.	अमृता पाठक	8वीं	20	68	70	158	पास
34.	लक्ष्मी डावर	8वीं	15	65	74	157	पास

पीथमपुर से छात्रों का समूह संस्थान में 9 जनवरी 2008 को पीथमपुर के सेन्ट फ्रांसिस हाई स्कूल से कक्षा पाँचवीं से दसवीं तक के 24 छात्रों का समूह संस्थान देखने आया उनके साथ टीचर सिस्टर फौन्सी भी थीं। उन्होंने बरली संस्थान द्वारा दिए जाने वाले प्रशिक्षण की काफी सराहना की और प्राकृतिक संसाधनों के हो रहे उपयोग की भी प्रशंसा की। सभी छात्रों ने संस्थान में चल रहे कामों को देखकर अपनी-अपनी खुशी जाहिर की। दसवीं कक्षा की स्वाती महाजन ने कहा कि यहाँ पर आकर "हमने जाना कि किस प्रकार आदिवासी लड़कियों को प्रशिक्षण दिया जा रहा है ताकि वे दूसरों को भी सिखा सकें।" एक अन्य विद्यार्थी विशाल फलक ने कहा कि "हम सभी ने यहाँ आकर बहुत कुछ सीखा है।"

गुर्दा रोग की जागृति शिविर में भाग लिया हमारे शरीर में दो गुर्दे होते हैं जो खून में से जहरीले पदार्थों को साफ करके पेशाब बनाते हैं। यदि हमने पानी कम पिया तो पेशाब गाढ़ी बनती है। हम पानी कम पीते हैं तो हमारे शरीर के खून से जहरीले पदार्थों को गुर्दे साफ नहीं कर पाते हैं और जहरीले पदार्थ हमारे गुर्दों में जमा होने लगते हैं। इसे पथरी कहते हैं। इसके अलावा गुर्दे में और भी संक्रमण होते हैं जो मूत्र नली से होते हुए गुर्दे तक पहुँचते हैं। इससे गुर्दा खराब होता है और काम करना बंद कर देता है। ऐसे इंसान को दूसरे गुर्दे की जरूरत होती है। ऐसे समय किसी दूसरे स्वस्थ इंसान का गुर्दा उसकी इच्छा से बीमार इंसान में आपरेशन द्वारा लगा सकते हैं। मध्यप्रदेश किडनी फाउंडेशन द्वारा 13 जनवरी 2008 को बॉस्केटबॉल कॉम्प्लेक्स में गुर्दा लेने और देने वालों के बीच राज्यस्तरीय खेल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में मध्यप्रदेश के अलग-अलग शहरों से करीब 150 गुर्दा रोगियों ने बॉस्केटबॉल, दौड़, आलू रेस, कुर्सी रेस में पूरे उत्साह से भाग लिया। इस प्रतियोगिता का मुख्य उद्देश्य लोगों तक यह संदेश पहुँचाना था कि शरीर में एक गुर्दा होने पर भी स्वस्थ और सामान्य जीवन जिया जा सकता है। आम धारणा यह है कि अगर हमने एक गुर्दा किसी दूसरे को दे दिया तो स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ता है पर यह मान्यता गलत है। इस मान्यता को उन रोगियों ने उत्साह और साहस से गलत साबित कर दिया। इस कार्यक्रम में बरली संस्थान के प्रशिक्षणार्थियों, प्रशिक्षिकाओं, निदेशिका, प्रबंधक ने

जानकारी प्राप्त की और सभी को गुर्दा रोगों के बारे में सीखने को मिला। यह खेल प्रतियोगिता समाज में फैली हुई गुर्दा रोगों की गलत मान्यताओं को दूर करने का एक प्रयास था।

क्वेस्ट लन्दन के फिल्म निर्माता संस्थान में क्वेस्ट मीडिया प्रोडक्शन्स लिमिटेड के निर्देशक श्री जैस्फर 14 जनवरी 2008 को संस्थान आए। उन्होंने दो दिनों तक संस्थान में रहकर यहाँ के दिनचर्या की जानकारी ली और प्रशिक्षण कार्यक्रम पर वीडियो फिल्म बनाई। वे संस्थान में चल रहे कार्यक्रमों से भी बहुत प्रभावित हुए।

सद्भावना सभा में भागीदारी

16 जनवरी 2008 को इंदौर के सत्प्रकाशन केन्द्र में सद्भावना प्रतिष्ठान द्वारा आयोजित सर्वधर्म सभा में संस्थान की निदेशिका ने भाग लिया। मध्यप्रदेश के महामहिम राज्यपाल डॉ. बलराम जाखड़ ने एक कैलेन्डर भी जारी किया गया जिसमें सभी धर्मों के चिन्हों सहित बहाई धर्म के चिन्ह को भी शामिल किया। संस्थान की निदेशिका को सद्भावना प्रतिष्ठान की संरक्षक होने के नाते उन्हें मुख्य अतिथि महामहिम राज्यपाल ने स्मृति चिन्ह भेंट किया। इस अवसर पर बरली संस्थान की पत्रिका 'बरली की दुनिया' की प्रति 'हम और हमारा भारत' अंक जिसमें संस्थान द्वारा सद्भावना बढ़ाने का प्रयास किया गया महामहिम राज्यपाल सहित लगभग 100 लोगों को भेंट की।

संस्थान के प्रबंधक और निदेशिका एडवांस सर्जरी सेंटर के लोकार्पण में

19 जनवरी 2008 को इंदौर के एम.वाय. अस्पताल में श्री आनंदमोहन माथुर एडवांस सर्जरी सेंटर के लोकार्पण के लिए एक समारोह का आयोजन किया गया। इस सेंटर का निर्माण मध्यप्रदेश शासन एवं आनंदमोहन माथुर चेरिटेबल ट्रस्ट के सहयोग से किया गया। जिसका लोकार्पण हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल महामहिम श्री वी.एस.कोकजे ने किया। इस सेंटर के निर्माण का मुख्य उद्देश्य है कि समाज के गरीब और जरूरतमंद लोगों को सस्ता और आधुनिक इलाज उपलब्ध कराना है। इस कार्यक्रम में बरली संस्थान के प्रबंधक श्री जिम्मी मगिलिगन और निदेशिका डॉ. (श्रीमती) जनक मगिलिगन ने भी भाग लिया।

स्वयं सेविका लोबना रोहानी

कु. लोबना रोहानी आस्ट्रेलिया से आई थी। लोबना ने



कु. लोबना रोहनी

संस्थान में एक महीने तक अपनी सेवाएं दी। संस्थान के कामों के अनुभव से उन्होंने कहा कि, “मुझे इस संस्थान में महिला सशक्तिकरण के काम का अवलोकन करने का मौका मिला जो बहुत ही मूल्यवान है और यह मौका देने के लिए मैं संस्थान की

आभारी हूँ।”

श्री ऐअन हयूगस

इंग्लैंड की वारविक यूनिवर्सिटी से मेकेनिकल इंजीनियर श्री ऐअन हयूगस जिसके पास इंजीनियर की डिग्री तो थी



संस्थान में काम करते हुए श्री ऐअन हयूगस

लेकिन हाथ से इंजीनियरिंग का काम सीखने के लिए बरली संस्थान आए। सितम्बर 2007 से लेकर छह माह की सेवाएं दी। श्री ऐअन ने संस्थान के प्रबंधक के मार्गदर्शन में सोलर चूल्हे बनाना सीखा। उन्होंने जाते समय कहा कि, संस्थान में सेवा का अनुभव उनके जीवन के सर्वोत्तम

अनुभवों में से एक है। बरली की कोई चीज या किसी इंसान को वे कभी भी नहीं भूल पाएंगे। खास कर उन्होंने जिम्मी जीजाजी व जनक दीदी को धन्यवाद दिया कि संस्थान के रहवास और काम के समय में उनको महत्व दिया और वे इन दोनों के काम करने के तरीके से प्रभावित हैं।

भिलाली गीत

गावेड़िया वो गाँव मां मानसोने सेरी घोणा आवे
सेरी दुखणों नी होए दीं तीं कुईक बी आई जाए।

साफ-सोफाई नी राखे ती डीलो मां

कीटाणु जाती रोहे ने सेरी आई जाए।

वोदू तोपो मां रोहे ती ने मौसम बोदले ती सेरी आई जाए।

घोणा दाहड़ा भोमारू ने खाँसारू रोहे ती सेरी आई जाए।

वोदू काम कोरे ने गोंदों खाणो ने

पाणी पीए ती सेरी आई जाए।

वारलो वाहलों नी जोड़े ती मांदा पोड़े ने सेरी आई जाए।

सेरी आवे तीना मानसोन वारू

देखभाल कोरणो चाहजे।

नानला पुरियान सेरी आवे ती

तीनान छिन्दरा निकाल देणो चाहजे।

सेरी वाला मानसो काजे आरोम कोरणी देणो चाहजे।

सेरी वाला मानसोन खाणे-पीनेन

ओटकोल राखणो चाहजे।

सेरी वाला मानसो काजे मामोर डॉक्टर

जुल लीजाईन इलाज कोरावणो चाहजे।

लेखिका व गायिका – दला, मानु, सागरी, जीला, भूरी जिला

धार व झाबुआ (म.प्र.)

इस पत्रिका के प्रकाषण में सहयोगी श्रीमती ढेडी बागदरे, श्री राकेश गुप्ता व श्री जिम्मी मगिलिगन

प्रिंटेड मैटर-बुक पोस्ट

पता

विशेष सूचना

प्रशिक्षण लेकर आप स्वयं के लिए, अपने परिवार और अपने गाँव के लिए जो भी काम कर रहे हों, हमें जरूर लिखकर भेजें ताकि आपके समाचार “बरली की दुनिया” में छाप सकें।

संपादक “बरली की दुनिया”

बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान

180, भमोरी, न्यू देवास रोड़,

इंदौर-452010 (म.प्र.) फोन : 0731-2554066